بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail: ansarullah@qadian.in | KhulasaKhutba-22.12.2023 | محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

ओहद की परिस्थितियों एवं घटनाओं का वर्णन।

तथा फ़लिस्तीन के निर्दोष पीड़ितों के लिए दुआ की पुनः प्रेरणा।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 22 दिसम्बर 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आजकल ख़ुत्बों में ओहद की लड़ाई का वर्णन हो रहा है। जैसा कि वर्णन हुआ था कि साधारण युद्ध में मुसलमानों ने काफ़िरों को बड़ी हानि पहुंचाई तथा वे भागने पर मजबूर हो गए परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम के सावधान करन के बावजूद जब तंग रास्ते की सुरक्षा पर नियुक्त अधिकांश सैनिकों ने वह रास्ता ख़ाली कर दिया तो दुश्मन ने उस ओर से हमला किया तथा मुसलमानों को भारी हानि हुई।

इसका विस्तार पूर्वक वर्णन कुछ इस प्रकार है कि जब मुशरिकों के झंडा वाहक एक एक करके मारे गए तो वे पीठ फेर कर भागने लगे। जब मुसलमानों ने काफ़िरों को भागते हुए देखा तो वे उनका पीछा करने तथा युद्ध में विजय से प्राप्त माल एकत्र करने में व्यस्त हो गए। उसी समय मुसलमानों का वह तीर चलाने वाला दल जिसे आँहुज़ूर सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने उस सकरे रास्ते पर नियुक्त करके यह आदेश दिया था कि किसी भी अवस्था में अपने स्थान से न हिलें, कहा जाता है कि वह दल युद्ध से मिलने वाली सम्पत्ति को एकत्र करने के लिए अपने स्थान से भागा। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम की ओर से नियुक्त अमीर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ी. ने उन लोगों को रोका, किन्तु वे न रुके। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ी. के साथ दस से भी कम सहाबी रज़ी. अपने स्थान पर जमे रहे।

अधिकांश इतिहासकारों ने तथा हदीस की पुस्तकों एवं ऐतिहासिक पुस्तकों में यही लिखा है कि वे सहाबी रज़ी. जो उस तंग रास्ते को छोड़ कर गए थे, उन्हें माले ग़नीमत (उस ज़माने की प्रथानुसार युद्ध में विजय के बाद दुश्मन सेना से लूटा हुआ माल) एकत्र करने की जल्दी थी। इसी तरह सूरः आले इमरान की

आयत 153 की तफ़सीर में भी यही लिखा है कि सहाबा रज़ी. माले ग़नीमत लूटने के लिए जल्दी जाना चाहते थे परन्तु सहाबा किराम रज़ी. के बारे में सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए उस तंग रास्ते को छोड़ने की बात दिल को नहीं लगती। सहाबा रज़ी. के सम्बंध में यह कहना अथवा सोचना भी उनकी शान के विरुद्ध है कि उन्हें माले ग़नीमत की पड़ी होती थी। वे तो अपने बीवी बच्चे, अपना माल, यहाँ तक कि अपनी जान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम पर निछावर कर चुके थे। युद्ध में विजय पाने की अवस्था में माले ग़नीमत मिल जाना एक अधिक लाभ की बात तो हो सकती है परन्तु सहाबा रज़ी. का उद्देश्य एवं लक्ष्य माले ग़नीमत कदाचित नहीं हो सकता। अतएव जब उस तंग रास्ते पर मौजूद सहाबा रज़ी. ने देखा कि काफ़िरों पर स्पष्ट विजय हो गई है तथा अब मुसलमान काफ़िरों को भगा रहे है तो ये सहाबा रज़ी. भी युद्ध में विजय की ख़ुशी मनाने में शामिल होने के लिए व्याकुल हो गए। सम्भवतः वे समझ रहे हों कि हमारे भाई तो सीधे ही जिहाद में शामिल हो रहे हैं और हम यहाँ इस तंग रास्ते पर खड़े हैं, अतः युद्ध के अन्तिम क्षणों में वे भी जिहाद की क्रिया में शामिल होने तथा विजय की ख़ुशी मनाने में शामिल होने के लिए वह तंग रास्ता छोड़ कर युद्ध के मैदान में आ गए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ीयल्लाहु अन्हु ने भी सूरः आले इमरान की आयत 153 की तफ़सीर में इसके बारे में एक तफ़सीरी नोट लिखा था जो प्रकाशित नहीं हुआ, फ़रमाते हैं कि मूल बात यह है कि उस तंग रास्ते पर नियुक्त सहाबा रज़ी. की भी यह इच्छा थी कि हम भी उस ओहद की लड़ाई में शरीक हों। यह भी संसारिक इच्छा थी। क्यूँकि वे समझ रहे थे कि हम सीधे रूप में युद्ध में शामिल नहीं, जबकि उन्हें तो आदेश रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन का था। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि तुम्हारा अफ़सर तथा उसके साथी तो आख़िरत को चाहते थे, उनके सम्मुख परिणाम एवं फल था, वे जानते थे कि इसका परिणाम अच्छा न होगा। इसके विपरीत तुम्हारी दृष्टि केवल पत्यक्ष पर थी, यह अर्थ लेना सहाबा किराम रज़ी. की उस शान के अनुकूल हैं जो उनके कामों तथा बलिदानों से प्रकट होते हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. फ़रमाते हैं कि जो लोग यहाँ दुनिया से अभिप्रायः लूट मार तथा माले ग़नीमत लेते ह, यह ठीक नहीं, वे क्षणिक विजय पर नज़र रखते थे तथा दुनिया से अभिप्रायः यह है कि वह जो मामला (अर्थात विजय) पहले प्रकट हो चुका है उनकी नज़र उस पर थी, जबकि अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ी. की नज़र आख़िरत पर थी, अर्थात वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन में सबसे बड़ी सफलता को देख रहे थे।

अंततः वह तंग रास्ता ख़ाली हो गया तथा अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ी. अपने गिनती के कुछ साथियों सहित वहाँ रह गए। मक्का के काफ़िरों के भागने वाली सेना में ख़ालिद बिन वलीद जो अभी ईमान नहीं लाए थे, उन्होंने उस सकरे रास्ते को ख़ाली देख कर इकरिमा बिन अबी जहल को साथ लेकर घुड़ सवार दल के साथे उस पहाड़ी तंग रास्ते पर हमला कर दिया। काफ़िरों का यह हमला इतना घोर एवं विनाशकारी था कि एक ही हमले में उस रास्ते पर नियुक्त सहाबा शहीद हो गए। मुसलमान जो इस हमले से बे-ख़बर युद्ध के मैदान में माले ग़नीमत जमा करने तथा काफ़िरों को पकड़ने में व्यस्त थे, वे संभल न पाए और इस अचानक

हमले से मुसलमान बिखर गए। सहसा युद्ध की बाज़ी काफ़िरों के पक्ष में पलट गई। भागते हुए काफ़िर भी इस नई स्थिति में वापस पलट आए और यूँ आगे तथा पीछे से काफ़िरों ने मुसलमानों को घेर लिया। मुसलमानों की श्रंखला बद्ध स्थिति क़ायम न रही तथा उन्होंने माले ग़नीमत को अपने हाथों से फेंक दिया। इस युद्ध में हज़रत हमज़ा रज़ी. की शहादत भी हुई थी। वे दो तलवारों के साथ हुज़ूर सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम के आगे लड़ाई लड़ रहे थे, वे अत्यंत दलेरी से कभी आगे बढ़ते और कभी पीछे हटते। उसी समय सहसा वे फिसल कर गिरे तथा वहशी ने भाला मार कर आप रज़ी. को शहीद कर दिया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम को हज़रत हमज़ा की शहादत की सूचना मिली तो आप स. को इसका भारी दुःख हुआ। रिवायत में लिखा है कि जब ताईफ़ की लड़ाई के बाद हज़रत हमज़ा रज़ी. का हत्यारा हुज़ूर सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम के सामने आया तो आपने उसे क्षमा तो कर दिया परन्तु हमज़ा रज़ी. से मुहब्बत का आदर करते हुए फ़रमाया कि यह वहशी मेरे सामने न आया करे। उसी समय उस वहशी ने अपने दिल में यह संकल्प कर लिया कि जिस हाथ से मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम के चाचा की हत्या की है, जब तक उसी हाथ से मैं किसी बड़े दुशमने इस्लाम का वध न कर लूँगा, चैन न लूँगा। अतः हज़रत अबू बकर रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में उसने यमामा के युद्ध में नबुव्वत के झूठे दावेदार मुसैलमा कज़्ज़ाब की हत्या करके अपने संकल्प को पूरा किया।

हज़रत हमज़ा रज़ी. के शव का अपमान भी किया गया था और आप रज़ी. के शव को अत्यंत निर्दयता के साथ कुचला गया था। इन कष्टदायक दृश्यों को देख कर हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम को भारी शोक पहुंचा। हज़रत हमज़ा रज़ी. की बहिन हज़रत सफ़या रज़ी. एक मज़बूत महिला थीं। वह युद्ध की समाप्ति पर बड़ी तेज़ी के साथ युद्ध के मैदान की ओर बढ़ रही थीं यहाँ तक कि सम्भव था कि वे मुसलमानों के कुचले हुए शवों को देख लेतीं, ऐसे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने पसन्द न फ़रमाया कि कोई महिला इन कष्टदायक दृश्यों को देखे। अतएव आप स. ने उन्हें रोकने का आदेश दिया। हज़रत सफ़या रज़ी. को रोकने की कोशिश की गई परन्तु आप रज़ी. को रोका न जा सका। अन्ततः जब आपको यह बताया गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि आप इन शवों को न देखें तो आप रुक गईं तथा अपने पास से दो कपड़े दिए तथा फ़रमाया कि यह मैं अपने भाई हमज़ा रज़ी. के लिए लाई हूँ क्यूँकि मुझे उनकी शहादत की सूचना मिल चुकी है। हज़रत सफ़या रज़ी. ने अपने भाई हमज़ा रज़ी. का शव देखने की इच्छा प्रकट की। आप रज़ी. का यह निवेदन हुज़ूर सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किया गया तो नबी करीम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने इसकी आज्ञा प्रदान कर दी। हज़रत सफ़या रज़ी. ने अपने भाई के कुचले हुए शव को देखा तो दया एवं करुणा की भावनाओं के कारण आँखों से आँसू फूट पड़े।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- इन्शाअल्लाह युद्ध का शेष विवरण आगे बयान करूँगा, तथा फ़रमाया- जैसा कि मैं फ़लिस्तीनियों के लिए दुआ करने को भी कहता रहता हूँ, दुआ करें कि अत्याचार के विरुद्ध

सुन्दर अमल की दुनिया को अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे। यद्यपि आवाज़ों में तो कुछ बुलन्दी पैदा होनी शुरु हुई है, बातें भी करते हैं कि अत्याचार हो रहा है, अत्याचार हो रहा है परन्तु इसराईल की सरकार से लगता है कि सब भयभीत हैं अथवा संकीर्ण सोच के कारण ये पश्चिमी देश मुसलमानों के विरुद्ध हैं तथा जो घृणा है उसके कारण ये चाहते हैं कि मुसलमानों पर ये अत्याचार समाप्त न हों अथवा जो प्रयास होने चाहिएँ उस तरह कोशिश न हो। यह नहीं देखते कि निर्दोष बच्चे हैं, पीड़ित महिलाएँ हैं, उन पर अत्याचार हो रहे हैं, बूढ़े हैं। तो इस प्रकार हम तो इन पर अधिक विश्वास नहीं कर सकते परन्तु प्रयत्न हर हाल में करते रहना चाहिए, उनको समझाते भी रहना चाहिए तथा दुआ भी करते रहना चाहिए। मुस्लिम देशों को ही अल्लाह तआला साहस दे कि अपनी आवाज़ में ज़ोर पैदा करें तथा वास्तव में एक बन कर इस अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाएँ तथा इसको समाप्त करने का प्रयास करें।

तत्पश्चात हुज़ूरे अनवर ने दो जनाज़े ग़ायब पढ़ाने की घोषणा करते हुए मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया।

1- मुकर्रम शेख़ हुसैन अबू सरदाना साहब जो ग़ाज़ा में रहते थे। पिछले दिनों ग़ाज़ा में इसराईल की बम्बारी में हमारे अहमदी बुज़ुर्ग शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम ग़ाज़ा के युद्ध में शहीद होने वाले पहले अहमदी हैं। मरहूम की आयु लगभग 94 वर्ष थी। मरहूम अलअज़हर युनीवर्सिटी के स्नातक विद्वानों में से थे। 1970 में मरहूम ने ख़ुदा के संकेत से बैअत की तथा अहमदियत में दाख़िल हुए। मरहूम हर दिल अज़ीज़, ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाले, क़ुर्आन करीम से लगाव रखने वाले निष्ठावान अहमदी थे। आपके कोई संतान नहीं थी, आपकी दूसरी पतनी जो आपके साथ थीं, वे भी इस हमले में ज़ख़्मी हुईं हैं। अल्लाह तआला इनके दर्जे बुलन्द फ़रमाए तथा इनकी पतनी को भी स्वस्थ करे। अल्लाह तआला इनकी दुआएँ फ़लिस्तीनियों के लिए भी क़ुबूल फ़रमाए तथा वहाँ अमन भी क़ायम फ़रमाए तथा इन लोगों को हज़रत मसीह मौऊद अलै. को मानने की भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

2- मुकर्रम उसमान अहमद गाकोरिया साहब ऑफ़ कीनिया। मृतक गत दिनों वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मरहूम का जमाअत की सेवाओं का लम्बा सिलिसिला है जो कई दशकों तक फैला हुआ है। जमाअत की अनेक पुस्तकों का सवाहिली भाषा में अनुवाद किया। मरहूम उत्तम शिष्टाचार के स्वामी, सिद्धांत वादी, तहज्जुद पढ़ने वाले, चन्दों को अदा करने में नियमबद्ध, मुबल्लिग़ों का आदर सतकार करने वाले, मेहमान नवाज़, नेक बुज़ुर्ग थ। मरहूम की पूरी संतान किसी न किसी अवस्था में सिलसिले की सेवा की तौफ़ीक़ पा रही है। हुज़ूरे अनवर ने मरहूमीन की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131